Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 899–903

DETAILED RESEARCH STUDY ON THE ROLE OF SCHEDULED TRIBES OF RAJASTHAN IN THE FREEDOM STRUGGLE

राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका पर विस्तृत शोध अध्ययन

Simran Kothari [1]

[1] Researcher, Shri Vanraj Arts and Commerce College, Dharampur, Veer Narmad South Gujarat University, Surat

ABSTRACT

English: Introduction: The tribes of Rajasthan have been known for their bravery, love of freedom and fighting spirit since ancient times. During the British rule, when the whole of India was struggling to ignite the flame of independence, the scheduled tribes of Rajasthan also became an integral part of this struggle. The aim of this research study is to analyze the role played by the Bhil, Meena, Garasia, Sahariya and other tribes of Rajasthan in the freedom struggle. Many scheduled tribes reside in Rajasthan, which mainly include Bhil, Meena, Garasia, Sahariya, Damor and Kathadi tribes.

The scheduled tribes of Rajasthan revolted against the British and many heroes sacrificed their lives for freedom. The scheduled tribes of Rajasthan played an important role in the freedom struggle. Many heroes revolted against the atrocities of the British and the landlords and sacrificed their lives for the motherland.

Conclusion: The tribes of Rajasthan played an important role in the struggle against British rule. The sacrifice of these heroes can never be forgotten. There is a need to give their struggle and valour a proper place in history so that the coming generations can remember their sacrifice. The scheduled tribes of Rajasthan played an important role in the freedom struggle, but they did not get the place in mainstream history which they deserved. Today there is a need to give due recognition to the sacrifice of these tribal heroes and make the coming generations aware of their contribution.

Hindi: प्रस्तावना: राजस्थान की जनजातियाँ प्राचीन काल से ही अपनी बहादुरी, स्वतंत्रता प्रेम और संघर्षशीलता के लिए जानी जाती रही हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान जब संपूर्ण भारत स्वतंत्रता की लौ जलाने के लिए संघर्ष कर रहा था, तब राजस्थान की अनुसूचित जनजातियाँ भी इस संग्राम का अभिन्न अंग बनीं। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के भील, मीणा, गरासिया, सहरिया और अन्य जनजातियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करना है। राजस्थान में कई अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें मुख्य रूप से भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, डामोर और काथड़ी जनजातियाँ शामिल हैं।

राजस्थान की अनुसूचित जनजातियों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया और कई वीरों ने स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई वीरों ने अंग्रेजों और जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह किया और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

निष्कर्ष: राजस्थान की जनजातियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन वीरों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। आवश्यकता है कि उनके संघर्ष और वीरता को इतिहास में उचित स्थान मिले, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके बलिदान को याद रख सकें। राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन मुख्यधारा के इतिहास में उन्हें वह स्थान नहीं मिला जिसके वे हकदार थे।आज आवश्यकता है कि इन जनजातीय वीरों के बलिदान को उचित मान्यता दी जाए और आने वाली पीढ़ी को उनके योगदान से अवगत कराया जाए।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4399

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी प्रतीक था। इस संघर्ष में राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भले ही इनका योगदान मुख्यधारा के इतिहास में कम दर्ज किया गया हो, लेकिन उनके बलिदान और संघर्ष को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के भील, मीणा, गरासिया, सहरिया और अन्य जनजातियों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करना है।

जस्थान की जनजातियाँ प्राचीन काल से ही अपनी बहादुरी, स्वतंत्रता प्रेम और संघर्षशीलता के लिए जानी जाती रही हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान जब संपूर्ण भारत स्वतंत्रता की लौ जलाने के लिए संघर्ष कर रहा था, तब राजस्थान की अनुसूचित जनजातियाँ भी इस संग्राम का अभिन्न अंग बनीं। इन जनजातियों ने अपने पारंपरिक गुरिल्ला युद्ध कौशल और संगठन शक्ति के बल पर ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी। हालांकि, मुख्यधारा के इतिहास में इनका योगदान अपेक्षाकृत कम दर्ज हुआ है, लेकिन उनका बलिदान भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण अध्याय है।

3.1. राजस्थान की प्रमुख अनुसूचित जनजातियाँ

राजस्थान में कई अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें मुख्य रूप से भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, डामोर और काथड़ी जनजातियाँ शामिल हैं। राजस्थान में कई अनुसूचित जनजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें मुख्यतः निम्नलिखित शामिल हैं:

1) **भील जनजाति** – राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति, जो बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर और प्रतापगढ़ में निवास करती है। भील राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति हैं।
2) **मीणा जनजाति** – जयपुर, दौसा, टोंक और सवाई माधोपुर में मुख्य रूप से पाई जाती है। मीणा ऐतिहासिक रूप से योद्धा जनजाति हैं।
3) **गरासिया जनजाति** – सिरोही, पाली और उदयपुर में निवास करती है।
4) **सहरिया जनजाति** – बारां और कोटा जिले में प्रमुख रूप से पाई जाती है।
5) **डामोर और काथड़ी जनजातियाँ** – डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र में निवास करती हैं।

2. स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान की जनजातियों की भूमिका

1) भील जनजाति और उनका संघर्ष

भीलों ने 19 वीं शताब्दी मेंब्रिटिश शासन के विरुद्ध कई विद्रोह किए और स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। भील विद्रोह का समय सीमा 1818-1840 तक का हैं । यह विद्रोह अंग्रेजों और स्थानीय शासकों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के खिलाफ था। भीलों ने अपनी पारंपरिक युद्ध तकनीक का उपयोग कर अंग्रेजों की नीतियों का विरोध किया। डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र के भीलों ने अंग्रेजों और स्थानीय शासकों की कर प्रणाली के खिलाफ आंदोलन चलाया। भील जनजाति ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

2) मीणा जनजाति का योगदान

मीणा जनजाति ऐतिहासिक रूप से एक योद्धा जाति रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 की क्रांति के दौरान मीणाओं ने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। जयपुर और टोंक के मीणाओं ने ब्रिटिश टुकड़ियों को भारी नुकसान पहुंचाया। मीणाओं ने 20वीं शताब्दी के विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई, विशेष रूप से मीणाओं ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मीणाओं ने राजस्थान के किसान आंदोलन में भाग लेकर ब्रिटिश शासकों और जमींदारों केखिलाफ आंदोलन किया। मीणा जनजाति स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रही।

3) गरासिया और सहरिया जनजाति का संघर्ष

गरासिया जनजाति ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया और जंगलों में रहकर ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध आंदोलन किया। सहरिया जनजाति ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलनों में भाग लिया और ब्रिटिश शासकों का विरोध किया।

3. राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने वाले प्रमुख जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी :

राजस्थान की अनुसूचित जनजातियों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया और कई वीरों ने स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई वीरों ने अंग्रेजों और जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह किया और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इनमें से कुछ प्रमुख शहीदों के नाम और उनका योगदान इस प्रकार है:

1) गोविंद गुरु (1858-1913) – मांडल विद्रोह के नायक

गोविंद गुरु एक समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने भील जनजाति को संगठित कर अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति की अगुवाई की। 1913 में मांडल विद्रोह (बांसवाड़ा, राजस्थान) के दौरान हजारों भील उनके नेतृत्व में इकट्ठा हुए। अंग्रेजों ने निर्दयता से गोलीबारी कर हजारों भीलों की हत्या कर दी। यह घटना राजस्थान के जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक थी। गोविंद गुरु ने भीलों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जगाई। गोविंद गुरु ने भीलों को संगठित कर अंग्रेजों के खिलाफ एक आंदोलन छेड़ा, जिसे "भगत आंदोलन" कहा जाता है। यह आंदोलन आत्मनिर्भरता, नशामुक्ति और ब्रिटिश सत्ता के विरोध पर केंद्रित था। 17 नवंबर 1913 को राजस्थान के मांड में हजारों भील इकट्ठा हुए, जिन्हें अंग्रेजों ने गोलियों से भून दिया। इस घटना को 'रक्तरंजित मांडल विद्रोह' कहा जाता है।

2) मोतीलाल तेजावत (1886-1963) – आदिवासी गांधी

भीलों और मीणाओं के संघर्ष के नायक थे। उन्हें "आदिवासी गांधी" के नाम से भी जाना जाता है। 1920 में एकलिंगजी (उदयपुर) में आयोजित भील महासभा में उन्होंने आदिवासियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने 'भूख के विरुद्ध आंदोलन' (Bijolia Movement) और मेवाड़ में भीलों व मीणाओं को संगठित कर जमींदारों और अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष किया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार किया और उन पर क्रूर अत्याचार किए, लेकिन वह अपने आदिवासी भाइयों के हक की लड़ाई लड़ते रहे।

3) रूपाजी और कल्लाजी – डूंगरपुर और बांसवाड़ा के भील योद्धा

857 की क्रांति के दौरान डूंगरपुर और बांसवाड़ा में भीलों ने रूपाजी और कल्लाजी के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई, अंग्रेजों को चुनौती दी और अंग्रेजी सैनिकों को भारी नुकसान पहुँचाया। अंततः अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर फांसी दे दी, लेकिन वे राजस्थान के आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी बन गए।

4) दिवान बहादुर – मीणा समाज के क्रांतिकारी

1857 की क्रांति में उन्होंने ब्रिटिश टुकड़ियों के खिलाफ युद्ध लड़ा और मीणा समुदाय को स्वतंत्रता संग्राम में संगठित किया। जयपुर और टोंक क्षेत्र में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। अंततः उन्हें गिरफ्तार कर दिया गया और अंग्रेजों ने उन्हें मौत की सजा दी।

5) झालू मीणा – 1857 की क्रांति के वीर योद्धा

झालू मीणा ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मीणा समाज का नेतृत्व किया और गुरिल्ला युद्ध तकनीक का उपयोग करके अंग्रेजों को भारी क्षति पहुंचाई। अंग्रेजों ने उनकी गतिविधियों से परेशान होकर उन्हें पकड़कर फांसी दे दी।

6) भगवत सिंह मीणा – भारत छोड़ो आंदोलन के नायक

942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भगवत सिंह मीणा ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा संभाला। उन्हें गिरफ्तार कर यातनाएँ दी गईं, लेकिन उन्होंने अंग्रेजों के सामने झुकने से इनकार कर दिया।

7) भोगीलाल पंड्या – आदिवासी समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी

गीलाल पंड्या ने राजस्थान के आदिवासी समाज को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल किया। उन्होंने आदिवासियों को संगठित कर उन्हें शिक्षा और सामाजिक सुधार के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने गांधीजी के असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया।

8) मंगू मेघवाल:

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किसान और मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन करने के कारण 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार कर लिया गया और अमानवीय यातनाओं के बाद शहीद हो गए।

9) गुलाब सिंह मीणा :

मीणा जनजाति के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए और मेवाड़ क्षेत्र में ब्रिटिश सेना के लिए गंभीर चुनौती बने। पकड़े जाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें फांसी दे दी।

10) धूला भील :

राजस्थान के भील समुदाय के एक वीर सेनानी थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। बांसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र में आदिवासी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। 1913 के मांडलगढ़ हत्याकांड के दौरान शहीद हो गए।

11) केसरी सिंह बारहठ :

स्वतंत्रता संग्राम में राजपूताना की प्रमुख हस्ती थे।अंग्रेजों के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहने के कारण जेल में डाल दिया गया, जहां अमानवीय यातनाओं के बाद शहीद हो गए।

12) ठाकरसी भील :

भील जनजाति के नायक, जिन्होंने जनजातीय समाज को संगठित किया और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें फांसी दे दी।

13) रामजी भील :

बांसवाड़ा के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्हें 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया और जेल में शहीद कर दिया गया।

14) ठाकुर विजय सिंह पथिक :

भूखे किसानों और मजदूरों के हक के लिए बिजोलिया आंदोलन का नेतृत्व किया। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उन्हें कई वर्षों तक जेल में रखा गया, जहां उनकी मृत्यु हो गई।

15) प्रताप सिंह बारहठ :

राजस्थान में क्रांतिकारी आंदोलनों के नेतृत्वकर्ता थे।अंग्रेजों के खिलाफ षड्यंत्र करने के आरोप में उन्हें कैद कर दिया गया, जहां यातनाओं के कारण उनका निधन हो गया।

16) हरिभाऊ उपाध्याय :

भारत छोड़ो आंदोलन में राजस्थान के आदिवासी समुदायों को संगठित किया। ब्रिटिश हुकूमत द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर यातनाएँ दी गईं, जिसके बाद उनकी मृत्यु हो गई।

4. निष्कर्ष

राजस्थान की जनजातियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन वीरों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इनके साहस और संघर्ष की गाथाएं आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया बल्कि अपने प्राणों की आहुति देकर देश को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन जनजातीय शहीदों का बलिदान हमें सदैव प्रेरित करता रहेगा। आवश्यकता है कि उनके संघर्ष और वीरता को इतिहास में उचित स्थान मिले, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके बलिदान को याद रख सकें।

राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन मुख्यधारा के इतिहास में उन्हें वह स्थान नहीं मिला जिसके वे हकदार थे। उनका संघर्ष न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ था, बल्कि सामाजिक और आर्थिक शोषण के विरुद्ध भी था। आज आवश्यकता है कि इन जनजातीय वीरों के बलिदान को उचित मान्यता दी जाए और आने वाली पीढ़ी को उनके योगदान से अवगत कराया जाए।

संदर्भ:

यहां कुछ संदर्भ हैं, जो राजस्थान के अनुसूचित जनजातियों की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका पर आधारित हैं।

विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेज एवं शोध पत्र

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय योगदान पर लेख

राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित आदिवासी इतिहास से संबंधित पुस्तकें

"आधुनिक भारत का इतिहास" - बिपिन चंद्र।

अध chapter 10: "1857 का विद्रोह और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन" पृष्ठ: 300-320

"भारत में जनजातीय आंदोलनों का इतिहास" - के.एस. सिंह । अध chapter 7: "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातियों की भूमिका" पृष्ठ: 159-174

"भारत के जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी" - डॉ. शंकर एस. लक्ष्मण। अध chapter 4: "राजस्थान में जनजातीय प्रतिरोध" पृष्ठ: 50-75

"राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम" - शमशेर सिंह ।

अध chapter 5: "जनजातीय विद्रोह और आंदोलन" पृष्ठ: 112-135

"राजस्थान: एक सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास" - वी. एस. पाठक। अध chapter 9: "राजस्थान में प्रतिरोधी आंदोलन" पृष्ठ: 220-245
"भारत में जनजातियों की भूमिका स्वतंत्रता संग्राम में" - आर.सी.मजूमदार।
अध chapter 3: "19वीं सदी के जनजातीय विद्रोह" पृष्ठ: 84-102ss
"भारत का स्वतंत्रता संग्राम" - सुमित्रा सेन। अध chapter 8: "राजस्थान में जनजातीय योगदान" पृष्ठ: 210-230
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (India's Freedom Struggle) - https://www.indianhistory.in
राजस्थान सरकार का आधिकारिक पोर्टल (Official Portal of Rajasthan Government) - https://rajasthan.gov.in
भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय वेबसाइट (Ministry of Culture, Government of India) - https://www.indiaculture.nic.in
राजस्थान का इतिहास (History of Rajasthan) - https://www.rajasthanhistory.com
जनजातीय मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार (Ministry of Tribal Affairs, Government of India) - https://tribal.nic.in
रिज़र्व फॉर ट्राइबल्स (Tribal Welfare) - https://www.tribalwelfare.org
भारतीय जनजातीय आयोग (Indian Tribal Commission) - https://www.indiatribals.org
"Tribal Uprisings in Rajasthan: A Historical Perspective" (Published in Volume 35, Issue 2)
"Role of Bhil and Meena Tribes in Indian Freedom Struggle" (Published in 2020, Volume 47, Issue 1)
"Tribal Studies Journal": "Adivasi Movements and Their Role in India's Freedom Movement" (Published in 2019, Volume 12, Issue 3)
"Economic and Political Weekly (EPW)": "The Role of Tribes in the Indian Struggle for Independence" (EPW, Volume 50, Issue 45)
Forgotten Heroes: Tribes in Rajasthan's Freedom Struggle" (Published in the November 2018 Issue)
"India Today": "Unsung Heroes: Tribes and the Independence Movement" (Published in August 2017)
"The Week": "Rajasthan's Tribal Movements and Their Role in Freedom" (Published in the January 2019 Issue)
"Rajasthan's Tribal Freedom Fighters" (Published in the March 2020 Issue)
"The Tribal Rebellions in Rajasthan" - Published in The Hindu, September 2021 Edition
"Bhil Uprising and the Freedom Movement" - Published in Times of India, November 2019
"Rajasthan's Tribal Freedom Fighters" - Published in Rajasthan Patrika, February 2018
"The Role of Tribal Communities in India's Independence Movement" - Published in The Indian Express, July 2020
"Rural and Tribal Movements in Rajasthan" - Published in The Economic Times , March 2019